पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

रामेश्वर सदा

बनाम

बिहार राज्य

2021 का आपराधिक अपील (खण्ड पीठ) संख्या 90

20 जून 2024

(माननीय न्यायमूर्ति श्री विपुल एम. पंचोली और माननीय न्यायमूर्ति श्री रमेश चंद मालवीय)

हेडनोट्स

अपील - उस निर्णय के खिलाफ दाखिल की गई, जिसमें संबंधित ट्रायल कोर्ट ने वर्तमान अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता की धारा 376(डी)/341/323 और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम की धारा 4/6 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए दोषी ठहराया। 15 वर्षीय पीड़िता के साथ अपीलकर्ता द्वारा बलात्कार करने का आरोप लगाया गया। निर्णय: चिकित्सीय रिपोर्ट में डॉक्टर ने बलात्कार के कोई साक्ष्य नहीं पाए। (पैरा 13) पीड़िता द्वारा प्रस्तुत कहानी में बड़े विरोधाभास और असंगतियां पाई गईं। पीड़िता को विश्वसनीय गवाह नहीं माना जा सकता। (पैरा 14) घटना के कोई अन्य गवाह नहीं हैं, और इसलिए, यह माना गया कि अभियोजन पक्ष अपीलकर्ता के खिलाफ मामला संदेह से परे सिद्ध करने में असफल रहा। (पैरा 16) जांच एजेंसी किसी भी दस्तावेजी साक्ष्य, जैसे स्कूल रजिस्टर, जन्म प्रमाणपत्र आदि, इकट्ठा करने में विफल रही, जिससे यह साबित हो सके कि पीड़िता नाबालिग थी। (पैरा 17)

अपील स्वीकृत की जाती है। (पैरा 22)

अधिनियमों की सूची

भारतीय दंड संहिता की धाराएँ 323, 341, 376(डी); पॉक्सो अधिनियम की धाराएँ 4/6

पक्षकारों की ओर से उपस्थिति

अपीलकर्ता/ओं के लिए: श्री अरुण, अधिवक्ता; श्री अंजनी पराशर, अधिवक्ता ;सुश्री कनिका, अधिवक्ता; श्री धनंजय कुमार तिवारी, अधिवक्ता

राज्य के लिए: श्री बिपिन कुमार, सहायक लोक अभियोजक

रिपोर्टर द्वारा हेडनोट बनाया गयाः अमित मल्लिक, अधिवक्ता

माननीय पटना उच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश

पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2021 का आपराधिक अपील (खण्ड पीठ) सं. 90

महिला थाना, कांड सं. 30 वर्ष- 2018 जिला- सुपौल से उद्भूत

==========

रामेश्वर सदा पिता स्वर्गीय बीरबल सदा निवासी गाँव-थारहा बरमोत्रा, थाना-बलुआ बाज़ार, जिला- सुपौल

... ...याचिकाकर्ता/ओं

बनाम

बिहार राज्य

... ...प्रतिवादी/ओं

==========

उपस्थिति:

अपीलार्थी/ओं के लिए: श्री अरुण, अधिवक्ता

श्री अंजनी पराशर, अधिवक्ता

सुश्री कनिका, अधिवक्ता

श्री धनंजय कुमार तिवारी, अधिवक्ता

राज्य के लिए: श्री बिपिन कुमार, सहायक लोक अभियोजक

==========

कोरम: माननीय न्यायमूर्ति श्री विपुल एम. पंचोली

और

माननीय न्यायमूर्ति श्री रमेश चंद मालवीय

मौखिक न्यायादेश

(द्वारा: माननीय न्यायमूर्ति श्री विपुल एम. पंचोली)

दिनांक: 20-06-2024

वर्तमान अपील दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 374(2)(जिसे इसके बाद 'संहिता' के रूप में संदर्भित किया गया है) के तहत दायर की गई है, जिसमें सुपौल के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश-प्रथम द्वारा 17.02.2020 को पारित दोषसिद्धि के निर्णय और 25.02.2020 को दिए गए सजा के आदेश को चुनौती दी गई है। यह मामला पोक्सो केस संख्या 08/2018 (सी.आई.एस.-04/2018) से संबंधित है, जो महिला थाना कांड संख्या 30/2018 से उत्पन्न हुआ है। विचारण न्यायालय ने अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता (जिसे इसके बाद 'भा.द.सं.' के रूप में संदर्भित किया गया है) की धारा 376(डी)/341/323 तथा पोक्सो अधिनियम की धारा 4 और 6 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए दोषी पाया। अपीलकर्ता को धारा 341 भा.द.सं. के तहत 1 माह की कठोर कारावास, धारा 323 भा.द.सं. के तहत 1 वर्ष की कठोर कारावास, धारा 376(डी) भा.द.सं. के तहत अंतिम सांस तक आजीवन कठोर कारावास, और 1 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई। पोक्सो अधिनियम की धारा 4 और 6 के तहत कोई अलग सजा नहीं दी गई, क्योंकि भा.द.सं. के तहत अधिक कठोर दंड निर्धारित किया गया है।

2. अभियोजन पक्ष का मामला, संक्षेप में, निम्नलिखित है:-

2.1. दिनांक 04.03.2018 को, लगभग 04:30 बजे अपराह्न, सूचनाकर्ता की दो बेटियाँ, जिनकी आयु 15 और 10 वर्ष थी, गाँव के उत्तरी हिस्से में घास काटने गई थीं। तभी, उनकी छोटी बेटी दौड़ती हुई आई और बताया कि अपीलकर्ता और सह-अभियुक्त देवचंद्र सदा ने पीड़िता को जबरन केले के बाग में ले गया। जब सूचनाकर्ता और अन्य परिवारजन केले के बाग में पहुँचे, तो उन्होंने पीड़िता को बिना कपड़ों के बेहोशी की हालत में जमीन पर पड़ा पाया, और अपीलकर्ता सहित अन्य सह-अभियुक्त वहाँ से भाग गए थे। इसके बाद, सूचनाकर्ता ने अपने परिवारजनों की मदद से पीड़िता को घर लाया, और जब पीड़िता को होश आया, तो उसने घटना के बारे में बताया।

2.2. प्राथमिकी दर्ज होने के बाद, जांच अधिकारी ने जांच शुरू की और जांच के दौरान, उन्होंने गवाहों के बयान दर्ज किए। इसके बाद, अपीलकर्ता/अभियुक्त के खिलाफ संबंधित दंडाधिकारी के न्यायालय में आरोप-पत्र दाखिल किया गया। चूंकि यह मामला विशेष रूप से सत्र न्यायालय द्वारा विचारणीय था, इसलिए संबंधित दंडाधिकारी ने इसे सत्र न्यायालय को सौंप दिया, जहाँ इसे पोक्सो 08/2018 (सी.आई.एस.-04/2018) के रूप में दर्ज किया गया।

3. अपीलकर्ता की ओर से विद्वान अधिवक्ता श्री अरुण, जिन्हें श्री अंजनी पराशर, सुश्री कनिका और श्री धनंजय कुमार तिवारी ने सहायता प्रदान की, तथा प्रतिवादी-राज्य की ओर से विद्वान सहायक लोक अभियोजक (ए.पी.पी.) श्री बिपिन कुमार की दलीलें सुनी गईं।

4. अपीलकर्ता की ओर से विद्वान अधिवक्ताओं ने तर्क दिया कि पीड़िता के बयान और संहिता के धारा 164 के अंतर्गत दर्ज बयान में प्रमुख विरोधाभास और विसंगतियाँ हैं। यह प्रस्तुत किया गया कि पीड़िता ने धारा 164 के अंतर्गत दंडाधिकारी के समक्ष अपने बयान में कहा कि देवचंद्र सदा ने मक्के के खेत में उस पर बलात्कार किया। इसके बाद, उसे केले के बाग में ले जाया गया, जहाँ वर्तमान अपीलकर्ता ने उस पर बलात्कार किया। हालांकि, न्यायालय में साक्ष्य देते समय, मुख्य परीक्षण में, पीड़िता ने कहा कि दोनों अभियुक्तों ने मक्के के खेत में उस पर बलात्कार किया। विद्वान अधिवक्ता ने आगे बताया कि प्रति-परीक्षण के दौरान, पीड़िता ने एक अलग कहानी बताई, जिसमें उसने कहा कि दोनों अभियुक्तों ने केले के बाग में उस पर बलात्कार किया। यह भी प्रस्तुत किया गया कि पीड़िता के मामले के अनुसार, देवचंद्र ने एक घंटे तक उस पर बलात्कार किया और इसके बाद वर्तमान अपीलकर्ता ने दो घंटे तक बलात्कार किया। हालांकि, अभियोजन की कहानी को चिकित्सकीय साक्ष्य द्वारा समर्थन नहीं मिलता। विद्वान अधिवक्ताओं ने इस स्तर पर अ.सा. -3 डॉ. नूतन वर्मा के साक्ष्य का उल्लेख किया, जिन्होंने पीड़िता की जाँच

की थी। यह प्रस्तुत किया गया कि डॉक्टर ने स्पष्ट रूप से राय दी कि बलात्कार के कोई संकेत नहीं मिले। इसलिए, विद्वान अधिवक्ताओं ने तर्क दिया कि यह मामला झूठे फंसाने का है और पीड़िता के बयान पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। उक्त गवाह को विश्वसनीय गवाह नहीं माना जा सकता, और इसलिए, केवल उक्त साक्ष्य के आधार पर दोषसिद्धि दर्ज नहीं की जा सकती।

5. विद्वान अधिवक्ताओं ने आगे कहा कि अभियोजन के अनुसार, पीड़िता विद्यालय में पढ़ रही थी, फिर भी जाँच एजेंसी पीड़िता की आयु सिद्ध करने के लिए कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सकी।

6. यह भी तर्क दिया गया कि अभियुक्त का बयान संहिता के धारा 313 के तहत दर्ज करते समय, न्यायालय ने अपीलकर्ता के खिलाफ सभी महत्वपूर्ण सामग्री को प्रस्तुत नहीं किया, जो एक गंभीर अनियमितता है। इसलिए, विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया कि उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए, इस अपील को स्वीकार किया जाए और आक्षेपित आदेश को निरस्त किया जाए।

7. दूसरी ओर, विद्वान सहायक लोक अभियोजक ने अपील का विरोध किया। उन्होंने तर्क दिया कि पीड़िता ने स्पष्ट रूप से अपीलकर्ता का नाम लिया और उसके खिलाफ आरोप लगाए। पीड़िता ने संहिता के धारा 164 के तहत भी अपीलकर्ता के खिलाफ विशेष रूप से आरोप लगाए। यह प्रस्तुत किया गया कि केवल इस आधार पर कि पीड़िता का बयान चिकित्सीय साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं है, अपीलकर्ता को लाभ नहीं दिया जा सकता। यह भी कहा गया कि केवल पीड़िता के साक्ष्य के आधार पर दोषसिद्धि दर्ज की जा सकती है, और विचारण न्यायालय ने आक्षेपित निर्णय और आदेश पारित करते समय कोई त्रुटि नहीं की। इसलिए, विद्वान सहायक लोक अभियोजक ने तर्क दिया कि इस अपील को खारिज किया जाए।

8. हमने विचारण न्यायालय के समक्ष अभियोजन द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों का पुनर्मूल्यांकन किया| हमने पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं की दलीलों पर भी विचार किया। यह स्पष्ट है कि अ.सा.-1 हफीना खातून ने अपनी मुख्य परीक्षण में कहा कि वह मजदूरी करने गई थी, तब उनकी बेटी मक्के के खेत में घास काटने गई थी। उनकी छोटी बेटी 04:30 बजे अपराह्न रोते हुए उनके पास आई और बताया कि देवचंद्र और रामेश्वर ने उसे पीटा, भगा दिया, और उसकी बहन का मुँह बाँधकर मक्के के खेत में ले गए। तब वह मक्के के खेत में अपनी बेटी की तलाश में गई, लेकिन वहाँ नहीं मिली। फिर वह केले के बाग में गई, जहाँ उसकी बेटी नग्न और बेहोश अवस्था में मिली। उन्होंने उसकी बेटी के कपड़े उठाए, उसे पहनाए, और देखा कि उसके निजी अंगों से खून बह रहा था। जब वह अपनी बेटी को उठा नहीं सकी, तो उन्होंने अपने पति को सूचित किया, जो आए और दोनों को घर ले गए। दो घंटे बाद, जब पीड़िता को होश आया, उसने बताया कि रामेश्वर और देवचंद्र ने उसके मुँह पर कपड़ा बाँधकर उसे मक्के के खेत में ले गए, अपने और उसके कपड़े उतारे, और एक-एक करके उस पर बलात्कार किया।

8.1. प्रति-परीक्षण में, उन्होंने कहा कि उन्होंने घटना के दो दिन बाद महिला थाना में साक्ष्य दिया। उनकी छोटी बेटी ने उन्हें घटना की सूचना दी थी। जब उन्होंने पीड़िता को बेहोश पाया, तो उसके मुँह से झाग निकल रहा था और मूत्रमार्ग से खून बह रहा था। बाद में, उन्होंने कहा कि उनकी बेटी केले के बाग में बेहोश थी। उन्होंने बताया कि वह अपनी बेटी को केले के बाग के बीच बेहोश अवस्था में देखी थी। उनके पति उनके पहुँचने के पाँच मिनट बाद वहाँ आए, और दोनों ने पीड़िता को कंधे पर उठाकर घर लाया। उन्होंने कहा कि वह अपनी बेटी को रात 10:00 बजे घर लाए। दो घंटे बाद, पीड़िता को होश आया और उसने घटना का विवरण दिया। उन्होंने यह भी नकारा कि उनके पति और अन्य चौदह अभियुक्तों ने सोमी सदा के घर में प्रवेश कर लूटपाट की या उनके परिवार की महिला सदस्यों के साथ छेड़खानी और अपमानजनक शब्दों का उपयोग किया।

9. अ.सा.-2, जो पीड़िता है, ने अपने मुख्य परीक्षण में बयान दिया कि घटना वाले दिन, वह मक्के के खेत में घास काटने गई थी। देवचंद्र और रामेश्वर वहाँ आए और उन्होंने उसके मुँह पर कपड़ा बाँध दिया, फिर उसकी बहन को थप्पड़ मारा और उसे भगा दिया। दोनों ने बारी-बारी से उसके साथ बलात्कार किया। उन्होंने उसकी पतलून और कपड़े उतार दिए और अपने कपड़े भी उतारे, फिर उसके साथ बलात्कार किया। इसके बाद, उसके निचले पेट में दर्द शुरू हो गया। उसके गुप्तांग से खून बहने लगा और फिर वह बेहोश हो गई। बाद में, उसने पूरी घटना अपने माता-पिता को बताया। उसने यह भी कहा कि वह विद्यालय में दाखिल हुई थी, जहाँ उसने लिखना सीखा।

9.1. अपनी प्रति-परीक्षण में, पीड़िता ने बयान दिया कि उसकी छोटी बहन उसके साथ घास काटने गई थी। उसे उस खेत के मालिक का नाम नहीं पता था, जहाँ वह घास काटने गई थी। उसने यह भी कहा कि घर से उस खेत तक पैदल पहुँचने में लगभग 3-4 घंटे लगे। दोनों अभियुक्त उस स्थान के पीछे से आए, जहाँ वह घास काट रही थी, और उन्होंने उसके मुँह पर तौलिया बाँध दिया और फिर उसे केले के बाग में ले गए। केले का बाग मक्के के खेत से एक घंटे की दूरी पर स्थित है, जहाँ दोनों ने उस पर बलात्कार किया। देवचंद्र पहला व्यक्ति था, जिसने उस पर एक घंटे तक बलात्कार किया। इसके बाद, रामेश्वर ने चाकू से धमकाते हुए उस पर दो घंटे तक बलात्कार किया। जब दोनों ने उस पर बलात्कार किया, तो वह बेहोश हो गई। उसने कहा कि उसे रात 12:00 बजे होश आया और फिर उसने अपने माता-पिता को घटना के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि वह सीधे पाँचवीं कक्षा में नामांकित हुई थी। पुलिस ने घटना के चार दिन बाद उससे पूछताछ की।

10. अ.सा.-3 डॉ. नूतन वर्मा सुपौल के सदर अस्पताल में महिला चिकित्सा अधिकारी के रूप में पदस्थापित थीं। पीड़िता का चिकित्सीय बोर्ड द्वारा परीक्षण किया गया,

जिसमें वह भी सदस्य थीं। पीड़िता का आंतरिक परीक्षण उनके द्वारा किया गया और निम्नलिखित पाया गया:

> "कोई संघर्ष के चिह्न या बलात्कार के कोई संकेत नहीं मिले। गहरे योनि स्वाब को एक निष्फल शीशी में लिया गया और पैथोलॉजिकल परीक्षण के लिए सुपौल सदर अस्पताल भेजा गया। "

10.1. अपनी प्रति-परीक्षण में, उन्होंने कहा कि यह बलात्कार का मामला नहीं है।

11. अ.सा.-4 मो. दाऊद ने अपनी मुख्य परीक्षण में कहा कि उनकी छोटी बेटी ने उन्हें सूचित किया कि देवचंद्र ने उनकी बड़ी बेटी को पकड़ा और मक्के के खेत में ले जाकर उस पर बलात्कार किया। बाद में, वह उसे केले के बाग में ले गया और वहाँ रामेश्वर सदा ने उस पर बलात्कार किया। जब उनकी पत्नी अपनी बेटी को देखने गई, तो उन्होंने पाया कि उसकी हालत खराब थी और उसके खून बह रहे थे। जब वह वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने भी देखा कि उसके निजी अंगों से खून रिस रहा था। फिर उन्होंने पीड़िता को उठाया और घर लाए। जब पीड़िता को रात 12:00 बजे होश आया, तो उसने देवचंद्र और रामेश्वर सदा का नाम बताया।

11.1. अपनी प्रति-परीक्षण में, उन्होंने कहा कि उनकी छोटी बेटी ने उन्हें घटना के बारे में सूचित किया था। जब उन्होंने अपनी बेटी को पाया, तो वह बेहोश थी और नग्न थी। वह यह नहीं बता सकते कि उनकी बेटी को कपड़े किसने पहनाए। उन्होंने कहा कि उनकी पत्नी ने शायद उनकी बेटी को कपड़े पहनाए होंगे। फिर, उन्होंने उसे उठाया और घर लाए। उनकी बेटी द्वारा पहने गए कपड़े पुलिस द्वारा जब्त किए गए और एक जब्ती सूची तैयार की गई।

12. अ.सा.-5 मरयम खातून पीड़िता की बहन है। उसने कहा कि वह अपनी बहन के साथ घास काटने गई थी। रामेश्वर और देवचंद्र ने उसे पीटा और फिर मक्के के

खेत से भगा दिया और उसकी बहन को ले गए। उसे यह नहीं पता कि मक्के के खेत में क्या हुआ। वहाँ से आने के बाद, उसने अपनी माँ को सूचित किया। उसके पिता और माँ उसकी बहन को बेहोशी की हालत में घर लाए। जब पीड़िता को सुबह होश आया, तो उसने बलात्कार की घटना के बारे में बताया।

12.1. अपनी प्रति-परीक्षण में, उसने कहा कि पीड़िता उसकी बड़ी बहन है। दोनों अभियुक्तों ने उसकी बहन को खेत में ले जाने से पहले उसे भगा दिया था। वह दौड़कर घर आई और अपनी माँ को सूचित किया। वह उस घटना की गवाह नहीं है जो पीड़िता के साथ हुई। उसकी बहन ने उसे बताया कि देवचंद्र ने उसके मुँह पर तौलिया बाँधा था।

13. अ.सा.-6 प्रेमलता भूपश्री जांच अधिकारी थीं, जो 06.03.2018 को सुपौल के महिला थाना में थाना प्रभारी के रूप में तैनात थीं। जांच का प्रभार लेने के बाद, उन्होंने पीड़िता के हरे रंग के सलवार को जब्त किया, जो खून और वीर्य से सना हुआ था। इसके बाद, उन्होंने पीड़िता का चिकित्सकीय परीक्षण करवाया और घटनास्थल का निरीक्षण किया। घटना का पहला स्थान मक्के का खेत था। जहाँ कथित घटना होने की बात कही गई, वहाँ मक्के की फसल के पौधे क्षतिग्रस्त पाए गए। इसके बाद, उन्होंने घटना के दूसरे स्थान, जो केले का बाग था, का निरीक्षण किया, जहाँ घास के पैरों से रौंदे जाने के निशान मिले। बाद में, उन्होंने कहा कि पीड़िता का बयान दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के अंतर्गत दर्ज करवाने के बाद और न्यायालय से अनुमति प्राप्त करने के बाद, पीड़िता के जब्त किए गए पायजामे को परीक्षण के लिए विधि-विज्ञान प्रयोगशाला (एफ.एस.एल.), पटना भेजा गया।

13.1. अपनी प्रति-परीक्षण में, उन्होंने कहा कि जिस स्थान से पीड़िता को कथित रूप से घसीटा गया, वह मक्के का खेत था, जहाँ मक्के के पौधे रौंदे हुए पाए गए। यह भी कहा गया कि कांड दैनंदिनी (केस डायरी) में इस बात का उल्लेख नहीं है कि

पीड़िता ने घसीटे जाने के दौरान कोई विरोध किया, हंगामा किया या चिल्लाई। परीक्षण के लिए भेजे गए कपड़ों पर वीर्य या खून नहीं पाया गया। उन्होंने केस डायरी में यह उल्लेख नहीं किया कि उन्होंने कोई रक्तस्राव चोट देखी थी। यह भी कहा गया कि चिकित्सकीय प्रतिवेदन में बलात्कार की पुष्टि नहीं हुई। चिकित्सकीय प्रतिवेदन में रक्तस्राव चोट जैसे किसी भी चोट का उल्लेख नहीं है। चिकित्सकीय प्रतिवेदन में पीड़िता को नाबालिग बताया गया है, इसलिए पोक्सो अधिनियम के तहत आरोप-पत्र प्रस्तुत किया गया। डॉक्टर ने चिकित्सकीय रिपोर्ट में बलात्कार का कोई साक्ष्य नहीं पाया।

14. पक्षकारों के लिए उपस्थित विद्वान अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने और अभिलेख पर उपलब्ध सामग्री तथा विचारण न्यायालय के समक्ष अभियोजन द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का अवलोकन करने के बाद, यह स्पष्ट होता है कि 04.03.2018 को अपराह्न 04:30 बजे हुई घटना के लिए, सूचनाकर्ता द्वारा संबंधित थाने में 06.03.2018 को 17:00 बजे लिखित शिकायत दी गई, अर्थात् दो दिन बाद। यह और स्पष्ट होता है कि पीड़िता के अलावा, इस घटना का कोई अन्य प्रत्यक्षदर्शी गवाह नहीं है। इसलिए, पीड़िता द्वारा दी गई कहानी की सावधानीपूर्वक जाँच आवश्यक है। अभिलेख से पता चलता है कि 06.03.2018 को प्राथमिकी दर्ज होने के बाद, पीड़िता को चिकित्सकीय परीक्षण के लिए चिकित्सक के पास ले जाया गया। सुपौल के सदर अस्पताल के चिकित्सकों के बोर्ड ने पीड़िता का परीक्षण किया। पीड़िता की चिकित्सकीय प्रतिवेदन विचारण न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की गई और इसे विधिवत प्रदर्शित किया गया। अ.सा.-03 डॉ. नूतन वर्मा, जो चिकित्सकीय बोर्ड की सदस्य थीं, ने न्यायालय के समक्ष साक्ष्य दिया। उक्त गवाह ने स्पष्ट रूप से कहा कि न तो संघर्ष के कोई निशान मिले और न ही बलात्कार के कोई संकेत पाए गए। अभिलेख से यह भी पता चलता है कि इसके बाद पीड़िता का बयान दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के अंतर्गत संबंधित दंडाधिकारी द्वारा दर्ज किया गया। अपने बयान में, पीड़िता ने कहा कि उसे देवचंद्र और वर्तमान अपीलकर्ता जबरन मक्के के खेत में ले गया। वहाँ

देवचंद्र ने उस पर बलात्कार किया और इसके बाद वर्तमान अपीलकर्ता उसे जबरन केले के बाग में ले गया। वहाँ अपीलकर्ता ने उस पर बलात्कार किया, जिसके परिणामस्वरूप वह बेहोश हो गई।

14.1 इस प्रकार, अभियोजन द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त साक्ष्यों से पता चलता है कि पीड़िता द्वारा प्रस्तुत कहानी में प्रमुख विरोधाभास और असंगतियाँ हैं। पीड़िता को विश्वसनीय गवाह नहीं माना जा सकता। इसलिए, हमें यह जाँचना होगा कि क्या कोई अन्य साक्ष्य उपलब्ध है जो पीड़िता की कहानी की पुष्टि करता हो।

15. अ.सा.-3 डॉ. नूतन वर्मा के साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि जब चिकित्सकीय बोर्ड ने पीड़िता का परीक्षण किया, तो बलात्कार का कोई संकेत नहीं पाया गया। यहाँ तक कि अ.सा.-6 प्रेमलता भूपश्री, जिन्होंने जांच की, ने भी प्रति-परीक्षण के दौरान स्वीकार किया कि उन्होंने कांड दैनन्दिनी (केस डायरी) में उल्लेख किया कि उन्होंने रक्तस्राव की चोट देखी थी। उन्होंने यह भी कहा कि चिकित्सकीय प्रतिवेदन में बलात्कार की पुष्टि नहीं हुई और चिकित्सकीय प्रतिवेदन में रक्तस्राव चोट जैसी किसी भी चोट का उल्लेख नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि चिकित्सक ने चिकित्सकीय प्रतिवेदन में बलात्कार का कोई साक्ष्य नहीं पाया। इस प्रकार, हमारा मत है कि पीड़िता द्वारा दी गई कहानी को चिकित्सकीय साक्ष्य समर्थन नहीं करते।

16. इस घटना का कोई अन्य गवाह नहीं है, और इसलिए, हमारा मत है कि अभियोजन अपीलकर्ता/अभियुक्त के खिलाफ मामले को उचित संदेह से परे सिद्ध करने में विफल रहा है।

17. यह भी उल्लेखनीय है कि पीड़िता और उसकी बहन के साक्ष्य से यह पता चलता है कि पीड़िता विद्यालय में पढ़ रही थी। हालांकि, जांच एजेंसी विद्यालय पंजी, जन्म प्रमाणपत्र आदि जैसे कोई दस्तावेजी साक्ष्य एकत्र करने में विफल रही, जिससे यह स्थापित हो सके कि पीड़िता नाबालिग थी।

18. हमने अभियुक्त के दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के अंतर्गत दर्ज बयान का भी अवलोकन किया है। उक्त बयान से यह पता चलता है कि विचारण न्यायालय ने बयान दर्ज करते समय अभियोजन द्वारा प्रस्तुत सभी महत्वपूर्ण साक्ष्यों को अपीलकर्ता/अभियुक्त के समक्ष नहीं रखा।

19. उपर्युक्त तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए, जब अभियोजन अपीलकर्ता/अभियुक्त के खिलाफ मामले को उचित संदेह से परे सिद्ध करने में विफल रहा, तो विचारण न्यायालय को अपीलकर्ता/अभियुक्त को दोषमुक्त करना चाहिए था। हालांकि, विचारण न्यायालय द्वारा पारित आक्षेपित निर्णय और आदेश ने अपीलकर्ता को दोषी ठहराया, और इसलिए, आक्षेपित आदेश को अपास्त और दरकिनार करने की आवश्यकता है।

20. सुपौल के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश-प्रथम द्वारा 17.02.2020 को पारित दोषसिद्धि का निर्णय और 25.02.2020 को दिया गया सजा का आदेश, जो पोक्सो 08/2018 (सी.आई.एस.-04/2018) में पारित किया गया, जो महिला थाना कांड सं. 30/2018 से उत्पन्न हुआ, को अपास्त और दरकिनार किया जाता है।

21. अपीलकर्ता, अर्थात् रामेश्वर सदा, को विचारण न्यायालय द्वारा लगाए गए सभी आरोपों से बरी किया जाता है। उन्हें त्काल हिरासत से रिहा करने का निर्देश दिया जाता है, यदि उनकी हिरासत किसी अन्य मामले में आवश्यक नहीं है।

22. तदनुसार, यह अपील स्वीकार की जाती है।

(विपुल एम. पंचोली, न्यायमूर्ति)

(रमेश चंद मालवीय, न्यायमूर्ति)

सचिन/-

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नही किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।